दैनिक ट्रिब्यून

लहरें

चंडीगढ़, रविवार, 5 अप्रैल, 2020

कोरोना वायरस के सामने पूरी दुनिया बेबस नज़र आ रही है। विश्व भर में इसकी रोकथाम को लेकर कार्रवाई युद्धस्तर पर हो रही है। कहीं लॉकडाउन है, कहीं कर्फ्यू तो कहीं मौत का सन्नाटा पसरा है। दूसरी तरफ कुछ ऐसे सवाल भी उठ रहे हैं कि क्या कोरोना वायरस किसी किस्म का जैविक हमला है? क्या इसके पीछे किसी तरह की कोई साज़िश है? वैज्ञानिक इसे चमगादड़ों से फैली बीमारी बता रहे हैं तो अमेरिका इस संक्रमण के लिए चीन को कटघरे में खड़ा करने में लगा है। उसका कहना है कि चीन ने यह वायरस अपनी वुहान स्थित लैब में बनाया है। दूसरी तरफ चीन कई बार कह चुका है कि उसके यहां यह वायरस अमेरिकी सेना के ज़रिए पहुंचा, वुहान में इसे लाने के पीछे अमेरिकी सेना ने साज़िश रची।





वायरस का रहस्यमयी जाल

पुष्परंजन

वायरस का पता सबसे पहले किसने, और कहां लगाया था? यूक्रेन और तुर्की की सीमा से लगे बेसराबिया में तंबाकू के पौधे 1888 के दौर में ख़राब हो रहे थे, उसकी वजह का पता लगाने की ज़िम्मेदारी सेंट पीटर्सबर्ग यूनिवर्सिटी के शोध छात्र दिमित्रि इवानोस्की को दी गई। वर्ष 1890 में दक्षिणी यूक्रेन के क्रीमिया में तंबाकू के प्लांट पर शोध करते-करते दिमित्रि इवानोस्की को लगा कि यह बैक्टीरिया से अलग विषाणु यानी वायरस है, जो अत्यंत घातक है और तेज़ी से विस्तार करता है।

वर्ष 1882 में प्रकाशित 'ऑन टू डिज़ीजेज़ ऑफ टोबैको' के ज़रिये दिमित्रि इवानोस्की ने समकालीन विज्ञान जगत को जानकारी दी कि एक नये विषाणु की उत्पत्ति हुई है, जिसे 'वायरस' कहा जाए।

इसके छह साल बाद 1888 में डच वैज्ञानिक मार्टिनस डब्ल्यू बेजरिंक ने 'इन्फेक्शियस एजेंट' को पहचाना, जो तंबाकू के पौधों को नष्ट कर रहे थे। इसका नाम 'टोबैको मोज़ेक वायरस' रखा गया। 1915 में ब्रिटिश शोधार्थी फ्रीडरिक डब्ल्यू टोवर्ट और 1917 में फ्रेंच मूल के कैनेडियन वैज्ञानिक फेलिक्स एच. हेरेले इस नतीज़े पर पहुंचे कि यह एजेंट बैक्टीरियाफेग (बैक्टीरिया भक्षक विषाणु) है, जिसे वायरस ही कहा जाए।



एक अजीब सी बात यह हुई कि वैज्ञानिक शोध करने वालों ने जानवरों और दूसरे जंतुओं को वायरस परीक्षण का माध्यम बनाया। बाद में यही इंसानों के लिए संकट का कारण बने।

वायरस से परिचय

1933 में ब्रिटिश शोधकर्ताओं विल्सन स्मिथ, क्रिस्टोफर एच. एंड्रयू और पैट्री पी. लैडला ने नेवलों में इंफ्लुएंजा के वायरस इंजेक्ट किये। कुछ दिनों बाद नेवलों के ज़रिये यह वायरस चूहों में स्थानांतरित हो चुका था। वर्ष 1941 में अमेरिकन वैज्ञानिक जॉर्ज के हर्स्ट ने इंफ्लुएंजा के वायरस को मुर्ग़ियों के भ्रूण में विकसित होते देखा। वर्ष 1949 में अमेरिकी साइंटिस्ट जॉन एंडर्स, थॉमस वेलर, फ्रीडरिक रॉबिन्स ने पोलियो वायरस पर पहले शोध किये, फिर उसे शीशे की सतह पर उसके सेल्स को कल्चर करने की विधि निकाली। इस कालक्रम की चर्चा कर यह भी बताना है कि पश्चिम का विज्ञान जगत वायरस के बारे में सबसे पहले परिचित हुआ था।

चीन ने वायरस को 1950 के दशक में जाना

चीन 1956 के आसपास वायरस से वाकिफ हुआ था, उस साल वुहान इंस्टीच्यूट ऑफ वायरोलॉजी (डब्ल्यूआईवी) की स्थापना हुई थी। इसके प्रकारांतर 1961 में चाइनीज़ अकादमी ऑफ साइंस, साउथ चाइना इंस्टीच्यूट ऑफ माइक्रोबायोलॉजी जैसी संस्थाएं खुलती चली गईं। 2005 में वुहान इंस्टीच्यूट ऑफ वायरोलॉजी ने कोरोना वायरस से संबंधित एक रिसर्च पेपर प्रकाशित किया था। उस शोध पत्र में बताया गया कि कोरोना वायरस को हॉर्स-शू बैट (एक क़िस्म के चमगादड़) ने ही फैलाया है। 2015 में वुहान के इस इंस्टीच्यूट ने एक शोध पत्र में इसका नाम 'बैट कोरोना वायरस' दिया था। 2019 के अंतिम महीनों में वुहान इंस्टीच्यूट ऑफ वायरोलॉजी ने नये क़िस्म के कोरोना वायरस की पहचान की थी। उसका नाम 'सार्स-सीओवी-टू' या 'कोविड-19' इसी इंस्टीच्यूट का रखा हुआ है।





सार्स की पहली चर्चा 1931 में

स्टीफेंस एन. जे. कोर्समन ने अपनी पुस्तक 'वायरोलॉजी' में जानकारी दी है कि कोरोना वायरस (एचसीओवी 229ई) की पहली चर्चा 1931 में हुई थी, यह सार्स (सीवियर एक्यूट रेसपेरेटरी सिंड्रोम) परिवार का सदस्य बताया जाता है। वैसे तो यह गंभीर तीक्ष्ण श्वसन लक्षण (सार्स) 1965 में आइसोलेट किया जा चुका था। इंसान इससे बेफिक्र हो चुके थे। मगर, नवंबर 2002 में चीन के क्वांगदोंग प्रांत में सार्स फैमिली से जुड़े कोरोना वायरस की वापसी हुई। 'सार्स' के शुरूआती लक्षण में दरअसल, न्यूमोनिया और कॉमन कोल्ड ही दिखता है। 2002 में सार्स से इन्फेक्टेड एक डॉक्टर चियांग यांगयोंग, क्वांगदोंग से हांगकांग आया। उसके संपर्क में आये लोगों ने देखते-देखते पूर्वी एशिया, फिर उत्तरी अमेरिका, यूरोप, और बाद में पूरी दुनिया में फैला दिया। मार्च 2003 में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) दुनिया को सतर्क करे, उससे पहले चीन, हांगकांग और विश्व के दूसरे हिस्सों में 800 लोग मौत के मुंह में समा चुके थे। उन दिनों सार्स अथवा कोरोना से प्रभावित आठ हज़ार लोगों का उपचार शुरू हुआ। जून 2003 तक इसे नियंत्रित कर लिया गया। कोरोना की कहानी फ़िर वहीं रूक गई।

वायरस पर प्रोपेगंडा वार

साल 2020 के प्रोपेगंडा वार का सबसे बड़ा लक्ष्य यह साबित करना रहा है कि 'कोविड-19' को पैदा करने वाला चीन है। **दुनियाभर में अब तक कोरोना से करीब 49 हज़ार लोगों की मौत, और साढ़े 9 लाख से अधिक लोगों को (*लेख लिखे जाने तक*)** 'कोविड-19' से ग्रस्त करने के साथ आर्थिक हाहाकार का ज़िम्मेदार भी चीन है। मगर, चीन ने कहना शुरू किया है कि इस सबके पीछे ट्रंप हैं। चीनी मीडिया के अनुसार, अक्टूबर 2019 में वुहान में सेवेंथ वर्ल्ड मिलिट्री गेम हुए थे, उस दौरान अमेरिकी सैनिक कोरोना वायरस चोरी-छिपे चीन छोड़ आये थे। चीन के इस प्रोपेगंडा वॉर में ईरान और रूस भी हामी भर रहे हैं। इस दुष्प्रचार युद्ध में दुनियाभर के वैज्ञानिक और शोधार्थी बंट से गये हैं। वैसे एक बात है, कोरोना के विरूद्ध खेमेबाज़ी के बावजूद दोनो में से कोई भी पक्ष इनकार नहीं कर रहा है कि इस सर्वाधिक घातक 'कोविड-19' वायरस का अधिकेंद्र वुहान नहीं रहा है। यह तो स्पष्ट है कि वुहान ही कोरोना का एपीसेंटर था, और वहीं से यह पूरी दुनिया में फैला है।



इटली में बसी चीनी आबादी बड़ा कारण

स्पेन और इटली में सबसे बड़ी संख्या में कोरोना से मौतें क्यों हुई, उसके कारण को छुपाने में इन देशों की सरकारें लगी रहीं। बाहरी दुनिया को बस इतना बताया गया कि घनी आबादी वाले घेट्टो में बसे लोगों की वजह से इटली में कोरोना का विस्तार हुआ। विश्व भर का मीडिया इसी के इर्द-गिर्द कहानी बुनने में व्यस्त रहा। इससे दो साल पहले की याद दिलाते हैं, इटालियन मिनिस्ट्री ऑफ लेबर एंड सोशल पालिसीज़ ने 2018 में जानकारी दी कि उसके यहां तीन लाख 9 हज़ार 110 चीनी श्रमिकों को रहने की अनुमति दी गई है। मिलान से लगा तुरिनो, लाम्बार्डी और सेंट्रल इटली के टस्कनी प्रांत का प्रातोये वैसे इतालवी नगर थे, जहां के गारमेंट इंडस्ट्री वालों ने वुहान से सस्ती लेबर लाकर बसा दिया था। वहां की फैक्ट्रियों में कपड़े, ये चीनी कारीगर तैयार करते, और उस पर 'मेड इन इटली' के लेबल लगा दिये जाते।

इटली में कोरोना जिस स्केल पर तबाही मचा गया, उसमें वुहान से चीनी नागरिकों की आवाजाही एक बड़ा कारण रहा है। स्पेन में भी वर्ष 1990 के दशक में चीनियों के बसने की रफ्तार तेज़ हुई। सन 2000 तक इनकी संख्या दो लाख पार कर चुकी थी। जाली जापानी पासपोर्ट के ज़रिये 'स्नेकहेड' नामक गैंग ने स्पेन के भ्रष्ट अधिकारियों से मिलकर मानव तस्करी को अंज़ाम दिया था। यहां के उद्योग जगत वाले और कारोबारी, सस्ती लेबर पाने की लालसा में ये सब कर बैठे। अब इसका अंज़ाम स्पेन भुगत रहा है।

कोरोनावैक्सीन पर प्रतिस्पर्धा

कल तक कोरोना वायरस रोधी वैक्सीन इज़ाद करने के वास्ते अमेरिका, रूस और जर्मनी, तीन दावेदार थे। अब चौथा चीन भी इसमें कूद पड़ा है। 26 मार्च 2020 को ग्लोबल टाइम्स में एक ख़बर छपी थी, 'चीन कोविड-19 टीके को विकसित करने के अंतिम चरण में है। इस प्रोजेक्ट को मेजर जनरल चन वेई देख रही हैं। 20 मार्च 2020 तक महिला वायरस विज्ञानी मेजर जनरल चन वेई ने 108 वालंटियर्स पर वैक्सीन का परीक्षण कर लिया है।' 2002-2003 में सार्स को नियंत्रित करने के लिये मेजर जनरल चन वेई ने नेज़ल स्प्रे इज़ाद किया था। उसके 11 साल बाद इबोला ने जब कहर बरपाया था, वायरोलॉजिस्ट चन वेई सिएरा लियोन पहुंच गईं थीं। इबोला जैसे वायरस को हराने के वास्ते 2014 से 2016 तक चन वेई पश्चिम अफ्रीका में ही थीं।



संदेह के घेरे में वेई

साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट में 3 मार्च 2020 को मिने चन की रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई कि चीनी वायरोलॉजिस्ट और बायोकेमिकल एक्सपर्ट मेजर जनरल चन वेई 2 जनवरी 2020 को वुहान अपनी टीम के साथ पहुंच चुकी थीं। उस समय ऐसा क्या हुआ कि वायरोलॉजिस्ट चन वेई का वुहान पहुंचना ज़रूरी हो गया था? एक बात और थी, नेशनल हेल्थ कमीशन के प्रमुख ज़ोंग नानशान जो ख़ुद वायरस के विशेषज्ञ रहे हैं, उन्हें मुंह बंद रखने को कहा गया। ज़ोंग नानशान 10 फरवरी को इतना भर संकेत दे पाये कि कोविड-19 का प्रकोप इस महीने के आख़िर तक चरम पर पहुंच जाएगा। ज़ोंग के इतना कहने भर से चीन से बाहर भी अफरा-तफरी मच चुकी थी।

एक और रिपोर्ट साइंटिफिक अमेरिकन ने 11 मार्च 2020 को प्रकाशित की जिसमें 'बैट वुमन' से ख्याति प्राप्त वायरोलिस्ट शी ज़ेंग-ली के हवाले से जानकारी दी गई कि 30 दिसंबर को वुहान इंस्टीच्यूट ऑफ वायरोलॉजी में वुहान सेंटर फॉर डिजीज़ कंट्रोल में भर्ती दो मरीज़ों के सैंपल लाये गये थे। वायरोलिस्ट शी ज़ेंग-ली ने कन्फर्म किया था कि ये उसी फैमिली के सैंपल थे, जो हॉर्स-शू बैट (एक क़िस्म के चमगादड़) में पाये गये थे। शी ज़ेंग-ली पिछले 16 वर्षों से क्वांगदोंग, क्वांगशी और युन्नान के उष्णकटिबंधीय प्रदेशों में चमगादड़ों में वायरस पर शोध कर रही थीं। इस वजह से शी ज़ेंगली 'बैट वुमन' के नाम से विख्यात हैं।

जैविक बम बनाने की तैयारी थी?

5 मार्च 2020 को द साइंटिस्ट में एमिली माकोवस्की की एक रिपोर्ट छपी, जिसमें यह शंका व्यक्त की गई कि क्या वुहान इंस्टीच्यूट ऑफ वायरोलॉजी (डब्ल्यूआईवी) के लैब से सार्स-सीओवी-टू वायरस किसी चूक से बाहर निकल गये थे? वुहान के जिस सी-फूड मार्केट से वायरस फैलने की चर्चा पूरी दुनिया में हुई है, उससे 'डब्ल्यूआईवी' की दूरी 10 मील है। यह गौर करने वाली बात है कि सार्स-सीओवी-टू का नया नाम 'कोविड-19' दिसंबर 2019 में इसी वुहान इंस्टीच्यूट ऑफ वायरोलॉजी ने दिया था। वर्जीनिया स्थित पॉपुलेशन रिसर्च इंस्टीच्यूट के सोशल साइंटिस्ट स्टीवेन मोशर ने फरवरी के आख़िर में न्यूयॉर्क टाइम्स को लिखे आलेख में शंका व्यक्त की, कि हो न हो डब्ल्यूआईवी की लैब में बायोकेमिकल एक्सपर्ट मेजर जनरल चन वेई की देखरेख में जैविक बम बनाने की तैयारी चल रही हो। स्थिति हाथ से निकलते देखकर उन्हें तत्काल बुलाया गया। इस कॉन्सपेरेसी थ्योरी को खड़ा करने के लिये दुनिया के कई हिस्सों से वैज्ञानिकों के बयान कोट किये गये हैं। 16 साल पहले 2004 में चीन ने सार्स वायरस की सुरक्षा के वास्ते डब्ल्यूएचओ के निर्देशों की अवहेलना की थी। 'लैब बेस्ड' प्रकोप की वजह से उसे पेइचिंग स्थित सीडीसी (सेंटर फॉर डिजीज़ कंट्रोल एंड प्रिवेंशन) के निदेशक को हटाना पड़ा था। पिछला संदर्भ दिसंबर 2019 में वुहान की लैब से सार्स-सीओवी-टू वायरस के निकल भागने की आशंका को मज़बूती दे रहा है। फिर भी, ऐसी आशंकाओं पर डब्ल्यूएचओ की मुहर नहीं लगी है।

घातक जैविक हथियार

लेकिन क्या जो सरकारें वायरस के खेल में लगी हैं, उन्हें इंसानी जिंदगी की परवाह है? एक तरफ ऐसे परीक्षणशालाओं में जानलेवा वायरस से बचने के वैक्सीन विकसित किये जाते हैं, दूसरी ओर इंसानी ज़िंदगियों को एक झटके में छीन लेने वाले जैविक हथियार ऐसी ही लैब में तैयार भी किये जाते हैं। दीगर है कि दुनिया अब भी 'बायोटेररिज़्म' के ख़तरे से मुक्त नहीं है। यह नाभिकीय हथियारों से कई गुणा अधिक विनाशकारी है। 1930-1940 के दौर को याद कीजिए, जापान-चीन युद्ध के दौरान प्लेग वाले बम चीनी शहरों पर गिरा दिये गये थे, जिसमें पांच लाख 80 हज़ार चीनी नागरिक मारे गये थे। अमेरिकी सेना ने मैरीलैंड के कैंप डेट्रिक में बायोलॉजिकल वॉरफेयर लेबोरेट्रीज स्थापित की थी, जहां घातक जैविक हथियार बड़ी संख्या में तैयार किये गये थे। उसकी देखादेखी सोवियत संघ ने 1970 से 1990 के बीच बेशुमार जैविक हथियार तैयार किये। वर्ष 1969 में रिचर्ड निक्सन ने बायोलॉजिक वेपन प्रोग्राम को विराम लगा दिया था। संयुक्त राष्ट्र की देखरेख में 10 अप्रैल 1972 को लंदन, मास्को और वाशिंगटन में दुनिया के 109 देशों ने बायोलॉजिकल एंड टॉक्सिक कन्वेंशन (बीटीडब्ल्यूसी)पर हस्ताक्षर किये। तीन साल बाद, 26 मार्च 1975 को 'बीटीडब्ल्यूसी' लागू हुआ। बावजूद इसके चीन, ईरान, उत्तर कोरिया, रूस, सीरिया और क्यूबा इस संदेह से बाहर नहीं निकल पाये कि उनके यहां जैविक हथियार विकसित नहीं किये जा रहे। इनके विरूद्ध प्रोपेगंडा करने वाला अमेरिका ख़ुद कितना मासूम है, यह बात उसके यहां वायरस लैब्स की सर्वाधिक संख्या को देखकर समझ में आ जाती है। इन सरकारों से अलग पुनर्गठन का प्रयास कर रहा अल क़ायदा, आइसिस और तालिबान जैसे अतिवादी ग्रुप हैं, जिनकी चाहत कैमिकल या जैविक हथियारों को हासिल करने में बराबर बनी हुई है। दो शब्दों में कहें, तो दुनिया सुरक्षित नहीं है!

वायरस पर काम करने वाली लैब



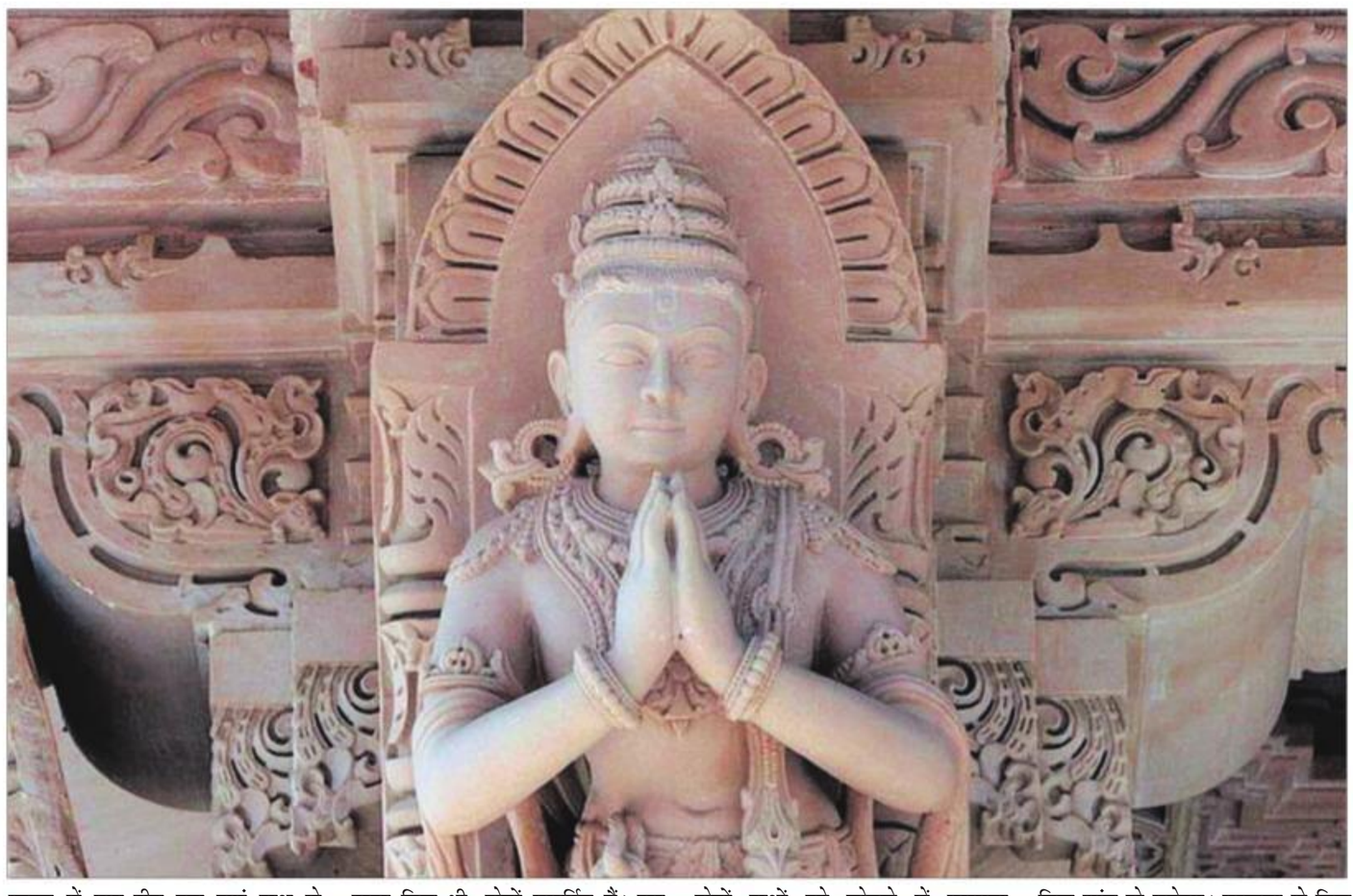
पूरी दुनिया में वायरस पर शोध करने वाली लैब की दो तिहाई संख्या अकेले अमेरिका में है। साठ से भी ऊपर। वैसे तो रूस में वायरस लैब, अमेरिका के मुकाबले आधी हैं लेकिन रूसी लैब में हुई एक लापरवाही को पूरी दुनिया ने भुगता था। साइबेरिया के कोल्टसोवो में 'स्टेट रिसर्च सेंटर ऑफ वायरोलॉजी' में शीत युद्ध के दौर में बायोलॉजिकल हथियार तैयार किये गये थे। इनमें से एक लैब में 'वीज़ेडवी' वैरीसेला ज़ोस्टर वायरस थे, जिनसे चिकन पॉक्स होता है। 1977 में किसी परीक्षण के दौरान इस रूसी लैब में विस्फोट हुआ, और वायरस बाहर आ गये। देखते-देखते पूरी दुनिया में तबाही मच गई। 1976 में दक्षिणी सूडान और डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो में इबोला के पसर जाने के पीछे भी ऐसी ही कहानी बताई जाती है।

इबोला पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ। 2016 तक ज़ायरे, बमबाली, सूडान, रेस्टोन में डब्ल्यूएचओ ने इबोला वायरस की छह प्रजातियों का पता लगाया था। यही हुआ, 'मर्ज़ बढ़ता ही गया, ज्यों-ज्यों दवा की'।

नमस्ते दिल, दिमाग से अभिवादन

दोनों हाथों को जोड़ने में समग्रता समाहित है। इसलिए परमात्मा के सामने दोनों हाथ जोड़ते हैं। जहां भी निवेदन करते हैं, वहां दोनों हाथ जोड़ते हैं...

ओशो



दुनिया में बहुत तरह के प्रणाम हैं, लेकिन दोनों हाथ जोड़ कर प्रणाम करने की प्रक्रिया इस देश की है। और इसके पीछे बड़े रहस्य हैं, बड़े प्रतीक हैं। अब तो वैज्ञानिक अनुसंधान भी इस बात के करीब आ रहा है। विज्ञान की नयी खोजें कहती हैं कि मनुष्य का मस्तिष्क दो हिस्सों में बंटा हुआ है। जो दाएं तरफ का हिस्सा है मनुष्य के मस्तिष्क का, वह बाएं हाथ से जुड़ा है। और जो बाएं तरफ का हिस्सा है मस्तिष्क का, वह दाएं हाथ से जुड़ा है। उलटा, क्रॉस के जैसा। बायां दाएं से जुड़ा है, दायां बाएं से जुड़ा है। चूंकि हमने दाएं हाथ को महत्वपूर्ण बना लिया है और हमारे सारे कृत्य उसी से हो रहे हैं, इसलिए हमारा बायां मस्तिष्क का हिस्सा सक्रिय है। बाएं मस्तिष्क के हिस्से के कुछ लक्षण हैं- गणित, तर्क, हिसाब-किताब, बहिर्यात्रा। और शायद इसीलिए दायां हाथ महत्वपूर्ण हो गया।

दाएं मस्तिष्क के लक्षण हैं- काव्य, भाव, अनुभूति, प्रेम। उनका तो कोई मूल्य नहीं है जगत में। इसीलिए बायां हाथ बेकार डाल दिया गया है। बाएं हाथ को बेकार डालने में हमने काव्य को बेकार कर दिया है, प्रेम को बेकार कर दिया है, अनुभूति को, भाव को बेकार कर दिया है। यह बड़ी तरकीब है। बड़ी जालसाजी है!

ये दोनों हाथ समान रूप से सक्रिय हो सकते हैं भविष्य में। और होने चाहिए। भविष्य के मनुष्य की जो प्रशिक्षण-प्रक्रिया होगी, उसमें ये दोनों हाथ सक्रिय करने की कोशिश की जाएगी। अभी तो हालत यह है, अगर कोई बच्चा बाएं हाथ से लिखता है, तो हम उसके पीछे पड़ जाते हैं कि दाएं से लिखो। दस प्रतिशत लोग बाएं हाथ से लिखने वाले पैदा होते हैं। दस प्रतिशत कोई छोटा आंकड़ा नहीं है। सौ में दस आदमी बाएं हाथ से लिखने वाले पैदा होते हैं। लेकिन मिलेगा तुमको शायद एकाध ही जो बाएं से लिखता हो, बाकी नौ को हम धक्का मार-मार कर, सजा दे-दे कर, स्कूल में मार-पीट कर दाएं हाथ से लिखवाने लगते हैं।

उसके पीछे कारण हैं। समाज तर्क को मूल्य देता है, काव्य को नहीं। समाज गणित को मूल्य देता है, प्रेम को नहीं। समाज हिसाब-किताब से जीता है, भाव से नहीं। यह भाव की हत्या की खूब तरकीब निकाली! मगर हजारों-हजारों सदियों से यह तरकीब चल रही है और हमारे मस्तिष्क का आधा हिस्सा निष्क्रिय होकर पड़ा है।

दोनों हाथों को एक साथ रख कर जोड़ने में प्रतीक है कि हम दोनों अंगों को जोड़ते हैं, हम इकट्ठे होकर नमस्कार कर रहे हैं। हम दोनों मस्तिष्कों को एक साथ लाकर नमस्कार कर रहे हैं। हमारा तर्क भी तुम्हें निवेदन है, हमारा प्रेम भी तुम्हें निवेदन है; हमारा गणित भी, हमारा काव्य भी; हमारा स्त्रैण चित्त भी, हमारा पुरुष चित्त भी, दोनों समर्पित हैं। हम इकट्ठे होकर समर्पित हैं।



अब भेद है! पश्चिम में लोग हाथ मिलाते हैं। उसमें एक ही हाथ का काम होता है। वह आधे मस्तिष्क का कृत्य है। उसमें समग्र मनुष्य समाहित नहीं है। दोनों हाथों को जोड़ने में समग्रता समाहित है। इसलिए परमात्मा के सामने दोनों हाथ जोड़ते हैं। जहां भी निवेदन करते हैं, वहां दोनों हाथ जोड़ते हैं।

जब तुम दोनों हाथ जोड़ते हो एक साथ, तो तुम्हारा मस्तिष्क और तुम्हारे दोनों हाथों की ऊर्जा वर्तुलाकार हो जाती है, विद्युत वर्तुल में घूमने लगती है। यह सिर्फ प्रतीक ही नहीं है, वस्तुतः यह घटना घटती है।

इसलिए ध्यान में कहा जाता है: पद्मासन। पद्मासन में एक पैर दूसरे पैर से जुड़ जाता है और हाथ पर हाथ रख लो तो हाथ भी एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं- तुम्हारा पूरा शरीर एक हो गया। तुम्हारा द्वंद्व टूट गया भीतर। तुम्हारे शरीर में विद्युत की ऊर्जा वर्तुलाकार घूमने लगी। यह जो वर्तुल है विद्युत का, बड़ा शांतिदाई है। इसलिए पद्मासन, सिद्धासन बड़े वैज्ञानिक आसन हैं। सुगमता से चित्त शांत हो सकेगा। सरलता से चित्त शांत हो सकेगा। शरीर को जोड़ कर हमने मस्तिष्क के दोनों खंडों को जोड़ दिया। दोनों मस्तिष्क के खंड जुड़ जाएं तो हमारे भीतर जो भाव का और विचार का द्वंद्व है, वह समाप्त हो जाता है। विज्ञान और धर्म का जो द्वंद्व है, वह समाप्त हो जाता है।

दोनों हाथों को जोड़ कर नमस्कार करना बड़ा वैज्ञानिक है। इसे हाथ मिलाने से मत बदल लेना, वह बहुत सस्ता है, उसका कोई मूल्य नहीं, उसकी कोई वैज्ञानिकता नहीं है।

दुई कर जोरि कै बिनती करिकै नाम कै मंगल गावहु रै

अब तो कुछ और बचा नहीं, दुई मिटा दी है, एक हो गया हूं और अब एक होने के बाद सिवाय मंगल गाने के और क्या बचता है! मंगल ही मंगल है!

(सौजन्य : ओशोधारा नानक धाम, मुरथल)

वास्तु

घर में पूजा स्थान

दिशा पर भी दें ध्यान

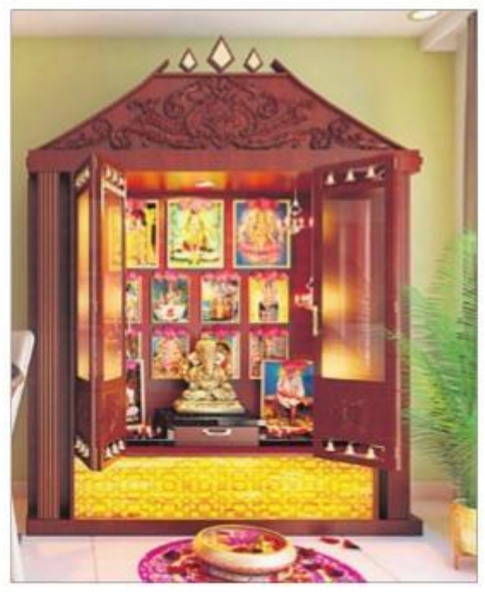
मदन गुप्ता सपाटू

कोरोना, कर्फ्यू या लॉकडाउन के कारण जब सभी धार्मिक स्थल बंद हैं, तब संभवतः लोग अपने घरों में पूजा स्थान के आगे कुछ अतिरिक्त वक्त बैठ रहे होंगे।



घर चाहे छोटा हो, या बड़ा, अपना हो या किराये का, लेकिन हर घर में पूजा का स्थान जरूर होता है। लेकिन, कई बार पूजा-पाठ के लिए स्थान बनवाते समय जाने-अनजाने में वास्तु संबंधी गलतियां हो जाती हैं। इन गलतियों की वजह से पूजा का फल प्राप्त नहीं हो पाता। सुख, शांति और सकारात्मक ऊर्जा बनाए रखने के लिए घर में मंदिर का उचित स्थान पर होना भी बहुत जरूरी है।

- पूजा घर हमेशा पूर्व या उत्तर दिशा में होना चाहिए। मंदिर का पश्चिम या दक्षिण दिशा में होना अशुभ फलों का कारण बन सकता है।
- पूजा घर के ठीक ऊपर, नीचे या आसपास शौचालय नहीं होना चाहिए। मंदिर को रसोईघर में बनाना भी वास्तु के हिसाब से उचित नहीं माना जाता।
- सीढ़ियों के नीचे भूलकर भी मंदिर न बनवाएं।
- बेडरूम में पूजा घर न बनाएं। यदि जगह की कमी के कारण मंदिर बेडरूम में ही बनाना पड़े तो ध्यान रखें कि वह कमरे की उत्तर पूर्व दिशा में हो और उसके चारों तरफ पर्दे लगा दें।
- ध्यान रखें कि घर में जहां मंदिर बना हो, उस तरफ पैर करके न सोयें।
- पूजा घर का द्वार टिन या लोहे की ग्रिल का नहीं होना चाहिए।
- पूजा घर का रंग सफेद या हल्का क्रीम होना चाहिए। पूजा कक्ष में सौंदर्य प्रसाधन का सामान, झाड़ू व अनावश्यक सामान न रखें।



- भगवान की मूर्तियों को एक-दूसरे से कम से कम एक इंच की दूरी पर रखें। एक ही घर में कई मंदिर न बनाएं, वरना मानसिक, शारीरिक और आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।
- घर में दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शंख, दो सूर्य-प्रतिमा, तीन देवी प्रतिमा, दो द्वारका (गोमती) चक्र और दो शालिग्राम का पूजन करने से गृहस्वामी को अशांति प्राप्त होती है।
- भगवान की तस्वीर या मूर्ति नैऋत्य कोण में न रखें। इससे बनते कार्यों में रुकावटें आती हैं।
- ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, गणेश, दुर्गा, कार्तिकेय की मूर्तियों का मुंह पश्चिम दिशा की ओर होना चाहिये। कुबेर, भैरव का मुंह दक्षिण की तरफ होना चाहिये। हनुमान जी की तस्वीर या मूर्ति का मुंह दक्षिण या नैऋत्य की तरफ रखना चाहिये।
- पूजन कक्ष में किसी भी देवता की टूटी-फूटी मूर्ति या तस्वीर न रखें। भगवान का चेहरा कभी भी ढकना नहीं चाहिए, यहां तक कि फूल-माला से भी चेहरा न ढकें।

कथा सार

सच्चा हितैषी

एक दरिद्र ब्राह्मण के मन में धन पाने की तीव्र कामना हुई। वह सकाम यज्ञों की विधि जानता था, किंतु धन ही नहीं तो यज्ञ कैसे हो? वह धन प्राप्ति के लिए देवताओं की पूजा और व्रत करने लगा। कुछ समय एक देवता की पूजा करता, उससे कुछ लाभ नहीं दिखाई पड़ता तो दूसरे देवता की पूजा करने लगता और पहले को छोड़ देता। इस प्रकार उसे बहुत दिन बीत गये। अंत में उसने सोचा- जिस देवता की आराधना मनुष्य ने कभी न की हो, मैं अब उसी की उपासना करूंगा। वह देवता अवश्य मुझ पर शीघ्र प्रसन्न होगा। ब्राह्मण यह सोच ही रहा था कि उसे आकाश में कुण्डधार नामक मेघ के देवता का प्रत्यक्ष दर्शन हुआ। ब्राह्मण ने समझ लिया कि मनुष्य ने कभी इनकी पूजा न की होगी। ये मेघदेवता देवलोक के समीप रहते हैं। वे मुझे अवश्य धन देंगे। बड़ी श्रद्धा से ब्राह्मण ने कुण्डधार मेघ की पूजा शुरू कर दी। प्रसन्न होकर कुण्डधार ने देवताओं की स्तुति की, क्योंकि वह स्वयं जल के अलावा कुछ दे नहीं सकते थे। देवताओं की प्रेरणा से यक्ष श्रेष्ठ मणिभद्र उनके पास आकर बोले, कुण्डधार क्या चाहते हो?

कुण्डधार- यक्षराज! देवता यदि मुझ पर प्रसन्न हैं तो मेरे उपासक इस ब्राह्मण को सुखी करें। मणिभद्र बोले, तुम्हारा यह भक्त यदि धन चाहता है तो इसकी इच्छा पूर्ण कर दो। यह जितना धन मांगेगा, मैं इसे दे दूंगा।

कुण्डधार बोले- यक्षराज! मैं इस ब्राह्मण के लिए धन की प्रार्थना नहीं करता। मैं चाहता हूं कि देवताओं की कृपा से यह धर्मपरायण हो जाये। इसकी बुद्धि धर्म में लगे। मणिभद्र बोले- अच्छी बात! अब ब्राह्मण की बुद्धि धर्म में ही स्थित रहेगी। उसी समय ब्राह्मण ने स्वप्न में देखा उसके चारों ओर कफन पड़ा हुआ है। यह देखकर उसके हृदय में वैराग्य उत्पन्न हुआ। वह सोचने लगा, इस प्रकार धन की आशा में ही लगे हुए जीवन बिताने से क्या लाभ? मुझे परलोक की चिंता करनी चाहिए।

ब्राह्मण वन में चला गया। उसने तपस्या करना प्रारंभ किया। दीर्घकाल तक कठोर तपस्या करने के कारण उसे अद्भुत सिद्धि प्राप्त हुई। वह स्वयं आश्चर्य करने लगा, 'कहां तो मैं धन के लिए देवताओं की पूजा करता था और अब मैं स्वयं ऐसा हो गया कि किसी को धनी होने का आशीर्वाद दे दूं तो वह निःसंदेह धनी हो जाएगा।' ब्राह्मण का उत्साह बढ़ गया। तपस्या में उसकी श्रद्धा बढ़ गयी। वह तत्परतापूर्वक तपस्या में लगा रहा। एक दिन उसके पास वही कुण्डधार मेघ आया। उसने कहा, ब्राह्मण! तपस्या के प्रभाव से आपको दिव्य दृष्टि प्राप्त हो गई है। अब आप धनी पुरुषों तथा राजाओं की गति को देख सकते हैं। ब्राह्मण ने देखा कि धन के कारण गर्व में आकर लोग नाना प्रकार के पाप करते हैं और घोर नर्क में गिरते हैं। कुण्डधार बोला, भक्तिपूर्वक मेरी पूजा करके आप यदि धन पाते और अंत में नर्क की यातना भोगते तो मुझसे आपको क्या लाभ होता? जीव का लाभ तो कामनाओं का त्याग करके धर्माचरण करने में ही है। उन्हें धर्म में लगाने वाला ही उनका सच्चा हितैषी है। ब्राह्मण ने मेघ के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

(महाभारत)

भगवान महावीर का संदेश

लाभ से ही बढ़ता है लोभ

ललित गर्ग

भगवान महावीर की जयंती मनाने की सार्थकता तभी है जब हम उनकी शिक्षाओं को जीवन में उतारें। महावीर ने जिन सत्यों का प्रतिपादन किया उन सत्यों का यदि जीवन में विकास करें, तो हमारा जीवन खुशहाल हो सकता है। उनमें से एक सत्य है कि जिस समय मनुष्य जाति में क्रोध, अहंकार, माया, छल और लोभ शांत होते हैं, तब समाज व्यवस्था अच्छी चलती है, अर्थव्यवस्था और राज्य व्यवस्था अच्छी चलती है। जब ये संवेग प्रबल बन जाते हैं, तब सारी व्यवस्थाएं विश्रृंखलित हो जाती हैं। जब मनुष्य के भीतर भय और लोभ का संवेग है, प्रभुत्व के विस्तार और घृणा का संवेग है, अपने को ऊंचा और दूसरे को हीन मानने का संवेग है, तब वह भूख मिटाने की चिंता क्यों करेगा? उसकी चिंता होगी शक्ति के निर्माण की। जहां शक्ति का निर्माण होगा, वहां शस्त्र निर्माण एक अनिवार्य शर्त है।

आवश्यकता का गड्ढा इतना गहरा है कि उसे कभी भरा नहीं जा सकता। महावीर ने कहा- 'लाभ से लोभ बढ़ता है।' जैसे-जैसे लाभ होता है वैसे-वैसे लोभ बढ़ता जाता है। एक आवश्यकता पूर्ण होती है तो दूसरी नई आवश्यकता जन्म ले लेती है। आवश्यकता की इस विशेषता के आधार पर अशांति का नियम निश्चित किया गया। आवश्यकता की असीमितता के कारण मनुष्य की शांति भंग होती है।

'लाभ से लोभ बढ़ता है'- का अध्ययन करने पर यह फलित होता है कि आवश्यकताओं की वृद्धि के क्रम में कुछ आवश्यकताओं की संतुष्टि की जा सकती है। किन्तु उनकी वृद्धि के साथ उभरने वाले मानसिक असंतोष और अशांति की चिकित्सा नहीं की जा सकती। इसलिए भौतिक कल्याण और आध्यात्मिक कल्याण के मध्य सामंजस्य स्थापित करना अनिवार्य है। यदि मनुष्य समाज को मानसिक तनाव, पागलपन, क्रूरता, शोषण, आक्रमण और निरंकुश प्रवृत्तियों से बचाना इष्ट है तो यह अनिवार्यता और अधिक तीव्र हो जाती है। इसी अनिवार्यता की अनुभूति करके ही महावीर ने समाज के सामने 'इच्छा-परिमाण' का सिद्धांत प्रस्तुत किया। इस आदर्श में अनिवार्यताओं और सुविधाओं को छोड़ने की शर्त नहीं है और विलासितापूर्ण आवश्यकताओं की परंपरा को चालू रखने की स्वीकृति भी नहीं है।



संयम है जरूरी

यह सर्वथा मनोवैज्ञानिक सत्य है कि मनुष्य हिंसा के लिए परिग्रह का संचय नहीं करता, किन्तु परिग्रह की सुरक्षा के लिए हिंसा करता है। जैसे-जैसे अपरिग्रह का विकास होता है, वैसे-वैसे अहिंसा का विकास होता है। परिग्रह का केंद्र-बिंदु मनुष्य का अपना शरीर होता है। वहीं से परिग्रह की चेतना फैलती है। जैन धर्म अपरिग्रह प्रधान भी है, अहिंसा प्रधान भी है और अनेकांत प्रधान भी है, सब कुछ है, वह तो सिद्धांत है। अनेकांत एक सिद्धांत है, अपरिग्रह एक सिद्धांत है, अहिंसा एक सिद्धांत है। सिद्धांत होना एक बात है, उनका पालन होना दूसरी बात है। भगवान महावीर ने मुनि के लिए अपरिग्रह का विधान किया है, गृहस्थ के लिए उन्होंने अपरिग्रह जैसे शब्द का प्रयोग नहीं किया। उन्होंने इच्छा-परिमाण की बात कही। जो अनन्त इच्छा है, उसकी कोई न कोई सीमा करनी चाहिए।

अर्जन के साधन अशुद्ध नहीं होने चाहिए, अप्रामाणिक नहीं होने चाहिए। महावीर की पूरी आचार-संहिता है गृहस्थ के लिए। उसमें अप्रामाणिकता के जितने व्यवहार हैं, उन सबका वर्जन किया गया है। अर्जित धन का उपयोग अपने विलास के लिए न किया जाए। व्यक्तिगत संयम किया जाए।

महावीर ने अध्यात्म और भौतिकवाद का समन्वय किया। महावीर ने जो कुछ कहा अनुभूति के आधार पर कहा। उन्होंने कहा- एक साथ किसी को आध्यात्मिक बनाना चाहोगे, असफल हो जाओगे। उसे इस क्रिया में धीरे-धीरे आगे बढ़ाओ। उसकी भूख को बढ़ाओ, ज्ञान-पिपासा को तेज करो, अपने आप काम हो जायेगा।

महावीर कहते हैं- अर्थ तुम्हारे लिए जरूरी है किन्तु उसका त्याग भी जरूरी है। हिंसा तुम्हारे लिए अनिवार्य है किन्तु अहिंसा भी उतनी ही अनिवार्य है। परिग्रह आवश्यक है तो अपरिग्रह भी जरूरी है।

धर्म वाक्य

कबिरा चिंता क्या करूं, चिंता से क्या होय
मेरी चिंता हरि करै, चिंता मोहि ना कोय।

कबीरा क्यों चिंता करे? चिंता से क्या होगा? मेरी चिंता प्रभु करते हैं। मुझे किसी तरह की कोई चिंता नहीं है।

आगे पीछे हरि खरा, आप समहारे भार
जन को दुखी क्यों करे, समरथ सिरजनहार।

भगवान भक्त के आगे पीछे खड़े रहते हैं। वे स्वयं भक्त का भार अपने ऊपर ले लेते हैं। वे किसी भक्त को दुखी नहीं करना चाहते, वे सर्व शक्तिमान हैं।

मेरी चिंता हरि करै क्या करुं मै चिंत
हरि को चित्यो हरि करै, ता पर रहु निहचिंत।

मेरे लिए प्रभु चिंता करते हैं। मुझे चिंता करने की जरूरत नहीं है। जो ईश्वर का निरतंर चिंतन करता है- प्रभु उसकी चिंता स्वयं करते है।

व्रत-पर्व

5 अप्रैल : प्रदोष व्रत, श्री विष्णु दमनोत्सव, आनंद नाम संवत्सर प्रारंभ
6 अप्रैल : अनंग त्रयोदशी, श्री महावीर जयंती (जैन)
7 अप्रैल : श्री सत्यनारायण व्रत, श्री हनुमान जयंती, श्री शिव दमनोत्सव, मेला कांसा देवी, देवी मेला (हथीरा, कुरुक्षेत्र)
8 अप्रैल : चैत्री पूर्णिमा (स्नानदानादि), वैशाख स्नान प्रारंभ, हनुमान प्राकट्योत्सव, अग्रोहा मेला, ओली समापन (जैन), धरती पूजा, खद्दी पर्व- छत्तीसगढ़, मेला सालासर-बाला जी (राजस्थान)
9 अप्रैल : मुस्लिम पर्व शब-ए-बारात
10 अप्रैल : गुड फ्राइडे
11 अप्रैल : श्री गणेश चतुर्थी व्रत, सती अनुसूया जयंती ईस्टर सेटरडे

-सत्यव्रत बेंजवाल